PAPER - IV (PART-II) HONS.

CLASSMATE
Date :
Page :

~~गृह प्रबन्ध~~ : गृह व्यवस्था का अर्थ, परिभाषा :-

गृह व्यवस्था दो संयुक्त शब्द है - एक गृह तथा दूसरा व्यवस्था या प्रबन्ध। गृह जो वास्तव में गृहिणी द्वारा बनाया जाता है, जिसमें गृहिणी की सक्रिय भूमिका रहती है, जबकि व्यवस्था शब्द का व्यापक अर्थ है जीवन के सभी स्तरों पर जीवन को व्यवस्थित करना ही व्यवस्था कहलाता है।

गृह व्यवस्था का तात्पर्य है कि परिवार के आवश्यकताओं की पूर्ति ~~पूर्ति~~ की जाय। प्राचीन समय में मनुष्य की आवश्यकताएं एवं साधन सीमित थे, इसलिये वह गृहव्यवस्था की योजना को सुविधापूर्वक नियंत्रित कर लेता था। किन्तु आज के समय में समाज के भौतिक मूल्यों व रहन सहन के स्तर में वृद्धि हुई है, मनुष्य की आवश्यकताएं निरन्तर बढ़ रही है। इन आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु पूर्ण सोच विचार कर व्यक्ति को साधन और साध्यों का चुनाव करना पड़ता है। इसलिए पुरानी और आज की व्यवस्था में बहुत अन्तर आ गया है। अतः गृहव्यवस्था का प्रमुख उद्देश्य पारिवारिक लक्ष्यों की पूर्ति करना है।

निकिल एवं डार्सी :- " गृह प्रबन्ध पारिवारिक साधनों का नियोजन, नियंत्रण एवं मूल्यांकन है, जिसके द्वारा पारिवारिक लक्ष्यों को प्राप्त किया जाता है।"

राजम्माल देवदास :- " प्रबन्ध प्राप्त भौतिक व मानवीय साधनों का नियोजन, नियंत्रण सर्वश्रेष्ठ उपयोग है।

ग्रास एवं क्रेण्डल :- " प्रबन्ध वांछित की प्राप्ति हेतु उपलब्ध साधनों का उपयोग है"।

साधारण शब्दों में, प्रबन्ध का अर्थ विचार पूर्वक की गई व्यवस्था से है जिनके द्वारा हम किसी भी परिस्थिति में समस्त उपलब्ध साधनों का सर्वोत्तम ढंग से उपयोग करते हैं व अपनी अधिकतम इच्छाओं की पूर्ती करने का प्रयास करते हैं। इस प्रकार कम से कम साधनों का उपयोग कर अच्छी से अच्छी तरह हमारे अधिकतम लक्ष्यों को प्राप्त करने की जो विधियाँ

Date :
Page :

है उनका अध्ययन ही गृह व्यवस्था या गृह प्रबन्ध कहलाता है।

गृह व्यवस्था में प्रेरक तत्व : जिस प्रकार जीवन दर्शन प्रेरक तत्वों से जुड़े है। गृह व्यवस्था के प्रेरक तत्व, मूल्य, लक्ष्य एवं स्तर एक दूसरे के पूरक हैं। मूल्य, लक्ष्य एवं स्तर एक त्रिकोण के तीन बिन्दुओं की भांति है जिसके केन्द्र में मूल्य निहित है। मूल्य से ही लक्ष्य एवं स्तरों का जन्म होता है परन्तु एक स्वतंन्त्र इकाई के रूप में मूल्य, लक्ष्य एवं स्तर एक दूसरे को प्रभावित करते हैं।

मूल्य :— अपने दैनिक बोल चाल में मूल्य शब्द का बहुत बार प्रयोग किया होगा उदाहरण के लिये किसी वस्तु का मूल्य पूछने पर आपको उस वस्तु का मूल्य पता चलता है जिसका भुगतान करने पर वह वस्तु आपकी होती है। परन्तु जीवन मूल्य अथवा गृह व्यवस्था के उत्प्रेरक तत्व के रूप में मूल्य की बात करें तो वह पूर्णतया भिन्न है। यहाँ मूल्य अनिश्चित एवं अमूर्त रूप में विद्यमान होते हैं। मूल्य वास्तव में मानवीय व्यवहार को प्रेरणा देते हैं। मूल्य व्यक्तिगत, सामुदायिक एवं सामाजिक हो सकते हैं। मूल्य जीवन में रीढ़ के हड्डी के समान है जो जीवन को दिशा प्रदान करते हैं तथा जिनके अभाव में समाज का अस्तित्व नहीं है। मूल्यों के द्वारा हमारी मनोवृत्तियों एवं विचारों का निर्माण होता है। मूल्य भौतिक और सामाजिक तथ्य है जो हमारे समाज में प्रत्येक व्यक्ति के लिये महत्व रखते हैं। ये मूल्य ही है जिसके अनुपालन में रामचन्द्र जी ने पिता की आज्ञापालन करने हेतु 14 वर्ष का वनवास लिया और प्रिय भ्राता भरत ने उनके वनवास से वापस आने तक उनकी चरण पादुकाओं को राजा मानकर अयोध्या में प्रजा की सेवा की यदि मूल्य न होते तो इतिहास में हमें प्रेरणा कहाँ से मिलती।

Contd